हालात और माशरे

मुफ्ती तकी उस्मानी (दब).

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हमे अपनी तरफ ध्यान और खयाल ही नही हे की मुझे अपनी कबर मे जाकर सोना हे इसका खयाल नही हे की मुझे अल्लाह के सामने जवाब देना हे मगर कभी इसकी बुरायी हो रही हे कभी उसकी बुरायी हो रही हे इसके अदर फला ऐब हे उसके अदर फला ऐब हे बस दिन रात इसके अदर फसे हूए हे खुदा के लिए इससे नजात हासिल करने की कोशिश करे.

जिस हालत मे जिस मआशरे से हम लोग गुजर रहे हे इसके अदर ये काम तो मुश्किल हे इसमे कोई शक नही लेकिन अगर इससे बचना इन्सान के इख्तियार से बहार होता तो अल्लाह इसको हराम ना करते इसलिए इससे बचना इन्सान के इख्तियार मे हे जब

कभी भी मजलिस के अदर बातचीत का मौजू तबदील हो तो उसको वापस ले आओ और अगर कभी गीबत के अदर मुब्तेला हो जावो तो फौरन इस्तिगफार करो और आईन्दा बचने के लिए दोबारा इरादे का ताजा करो.

याद रखो ये गीबत ऐसी चीज हे जो फसाद पैदा करने वाली हे झगडे इसके जरिये होते हे आपसी ना इत्तेफाकिया इससे पैदा होती हे और समाज मे इस वकत जो बिगड नजर आ रहा हे इसमे बहुत बडा दखल गीबत का हे अगर कोई शख्स शराब पिता हो नउजुबिल्लाह. तो जो शख्स जरा भी दीन से ताल्लुक रखने वाला हे वो उसको बहुत बुरी निगाह से देखेगा और उसको बुरा समजेगा और ये सोचेगा की ये शख्स बुरी लटके अदर मुब्तेला हे और जो शख्स मुब्तेला हे वो ये सोचेगा की मुझसे बडी गलती

हो रही हे मे एक बडे गुनाह के अदर मुब्तेला हू.

लेकिन एक शख्स गीबत कर रहा हे तो उसके बारे मे इसकी बुरायी का एहसास दिल मे पैदा नही होगी और ना खुद गीबत करने वाला ये समझता हे की मे किसी बडे गुनाह के अदर मुब्तेला हू और इसका मतलब ये हे की इस गुनाह की बुरायी दिल मे बैठी हुवी नही और इसकी हकीकत का पुरे तरीके से समझ नही हे वरना दोनो गुनाहो मे कोई फर्क नही हे अगर उसको बुरा समझ रहा हे तो इसको भी बुरा समजना चाहिए इस लिए इसकी बुरायी दिलो मे पैदा करो की ये खतरनाक बीमारी हे.

इस्लाही खुत्बात उर्दू /१७ से मजमून का खुलासा लिप्यांतरण किया है.